

पश्चात्ताप - 1

अव्यक्त बापदादा :-

पश्चात्ताप जैसे कोई भी बन्धन से मुक्त होते वैसे ही सहज रीति शरीर के बन्धन से मुक्त हो सकें। नहीं तो शरीर के बन्धन से भी बड़ा मुश्किल मुक्त होंगे। फाइनल पेपर है-अन्त मती सो गति। अन्त में सहज रीति शरीर के भान से मुक्त हो जायें - यह है ' पास विद ऑनर" की निशानी। लेकिन वह तब हो सकेगी जब अपना चोला टाइट नहीं होगा। अगर टाइटनेस होगी तो सहज मुक्त नहीं हो सकेंगे। टाइटनेस का अर्थ है कोई से लगाव। इसलिए अब यही सिर्फ एक बात चेक करो - ऐसा लूज चोला हुआ है जो एक सेकेण्ड में इस चोले को छोड़ सकें? अगर कहाँ भी अटका हुआ होगा तो निकलने में भी अटक होगी। इसी को ही एवररेडी कहा जाता है। ऐसे एवररेडी वही होंगे जो हर बात में एवररेडी होंगे। प्रैक्टिकल में देखा ना - एक सेकेण्ड के बुलावे पर एवररेडी रह दिखाया। यह सोचा क्या कि बच्चे क्या कहेंगे? बच्चों से बिगर मिले कैसे जावें - यह सोचा? एलान निकला और एवररेडी। चोले से इज़ी होने से चोला छोड़ना भी इज़ी होता है, इसलिए यह कोशिश हर वक्त करनी चाहिए। यही संगमयुग का गायन होगा कि कैसे रहते हुए भी न्यारे थे, तब ही एक सेकेण्ड में न्यारे हो गये। बहुत समय से न्यारे रहने वाले एक सेकेण्ड में न्यारे हो जायेंगे। बहुत समय से न्यारापन नहीं होगा तो यही शरीर का प्यार पश्चात्ताप में लायेगा। इसलिए इससे भी प्यारा नहीं बनना है। इससे जितना न्यारा होंगे उतना ही विश्व का प्यारा बनेंगे। इसलिए अब यही पुरुषार्थ करना है। ऐसे नहीं समझना है कि कोई व्याधि आदि का रूप देखने में आयेगा तब जायेंगे, उस समय अपने को ठीक कर देंगे। ऐसी कोई बात नहीं है।

➤➤ प्रायश्चित और पश्चात्ताप में अंतर

➤➤ _ ➤➤ पश्चात्ताप

- यह एहसास होना की मैंने गलती की
- पर जरूरी नहीं की इंसान अपनी गलतियों से सबक ले
- इंसान अपनी गलती को सोच सोच कर दुखी होता रहता है

➤➤ _ ➤➤ प्रायश्चित

- “जो हुआ... उसे बदला नहीं जा सकता” - इंसान यह स्वीकार कर लेता है
- अपनी गलतियों को सोच सोच कर दुखी नहीं होता
- पर इंसान अपनी गलतियों से सबक लेता है
- प्रायश्चित बहुत ज़रूरी है... पर इसका Time Period छोटा होना चाहिए
- प्रायश्चित की विधि :-

■ प्रायश्चित जितना गहरा होगा, Realisation जितना गहरा होगा, परिवर्तन भी उतना ही गहरा होगा

- खुद का आत्म विश्लेषण करो
 - प्रतिज्ञा करो
 - और फिर प्रतिज्ञा को बार revise करो
-

➤➤ देह के प्यार से पश्चाताप (REPENTANCE)

➤➤ _ ➤➤ R= Restlessness (बेचैनी) का अनुभव होता है

→ देह के प्यार में मन अशांत रहता है

- आत्मा का प्यार मन को स्थित कर देता है

→ देह को संकल्प में भी टच करना महा महा महा पाप है

➤➤ _ ➤➤ E = Excitement (उत्तेजना)

→ देह के प्यार में तपस्या तो बहुत दूर की बात , साधारण पुरुषार्थ भी नहीं हो सकता है

- योगी की कर्मेन्द्रिया तो शीतल होती हैं

➤➤ _ ➤➤ P = Provoke Other vices

→ काम विकार बाकी विकारों को भी Stimulate करता है

➤➤ _ ➤➤ E = Emotional Disturbance

➤➤ _ ➤➤ N = NO INTEREST IN G = ज्ञान Y = योग D = धारणा S = सेवा

→ देह का प्यार आपको जीवन के हर क्षेत्र में नीचे लाएगा

➤➤ _ ➤➤ T = TIME WASTE

➤➤ _ ➤➤ A = ABSENCE OF ENERGY / ENTHUSIASM

→ ब्राह्मण जीवन का आधार ही हिल जाएगा

→ ब्राह्मण जीवन के लक्ष्य से ही भटक जाओगे

➤➤ _ ➤➤ N = NO CONCENTRATION

→ संसार के आशिक माशूक किसी भी और कार्य में एकाग्रचित नहीं हो पाते हैं

➤➤ _ ➤➤ C = CRAVING (तलब)

→ कोई भी भोग एक बार भोगने के बाद खतम नहीं होते

- दुबारा भोगने की कामना छोड़ कर जाते हैं

- काम वासना में भी Alcohol, Drugs की तरह Addiction होती है

»» _ »» E = Energy Wastage

→ Physical Energy

- ब्रह्मचार्य का तेज बह जाएगा

→ Mental Energy

→ Spiritual Energy

➤ ➤ चोले को ढीला कैसे करें ?

»» _ »» Soul Consciousness बढ़ाते जाएँ

»» _ »» Spiritual Drills

»» _ »» Visualisation Of One' s Death

→ शरीर को जलता हुआ देखें

»» _ »» ज्ञान मंथन

→ योग से आप जिस अवस्था को प्राप्त करते हैं, वह अवस्था आप

ज्ञान मंथन से भी प्राप्त कर सकते हैं

→ मनन करते करते मगन हो जाओ

→ अव्यक्त बापदादा :- “जो बच्चे विचार सागर मंथन नहीं करते ...

वह बीमार हैं”

»» _ »» तीन बातें जो हमेशा साथ साथ आती है :-

→ अचानक

→ एवर रेडी

→ बहुत समय

Avyakt Murli Reference :- Page Number 3 Of Paschataap Book